अ ध्या य - ६

कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" जी की
कविता का शिल्प

पृष्ठ १२९ से १३४

अध्याय – ६

कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" की

कविता का शिल्प

हिन्दी साहित्य का प्रगतिशील काव्य जन जन का काव्य है। अतः इसकी रचना और शैली बडी सरल और साफ सुथरी है । छायावादी काल में जो काव्य छंद की चौखट में जकड़ा हुआ था वह प्रगतिवाद के धरातल पर आकर मुक्त हुआ है । अर्थात "जन-जन में वाणी का प्रसार करना प्रगतिवादी कवियों को इष्ट रहा है अतएव भाषा को अलंकार की कोई आवश्यकता नहीं रह गई है । भाषा जनवादी विचारों के अनुकूल जन भाषा के रूप में प्रस्तुत हुई और इ उससे अलंकारों के आवरण उतार दिये गये । छन्दके बन्ध टूट गये, और गीत मुक्त होकर जनवाणी का प्रसार करने लगे ।"[1] अतः स्पष्ट है कि प्रगतिशील काव्य में शैली की जटीलता नहीं है । यह काव्य अत्यंत सरल और सिधासादा है ।

कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" प्रगतिशील काव्य के जाने माने प्रमुख कवियों में से एक हैं अतः उनकी शैली भी सरल और सहज है । "प्रगतिवाद में काव्य के कला पक्ष की उपेक्षा की गयी । यही कारण है कि इस युग के कवियों की प्रतिभा राजनीतिक वाग्जाल में उलझ गई ।"[2] डॉ.गोविंद रजनीश की प्रगतिवादी कवियों के प्रति यह धारणा कवि "सुमन" के बारे में मुझे ठीक नहीं लगती क्यों कि साहित्य और राजनीति को कवि "सुमन" ने कभी एक नहीं समझा ।

---

१. डॉ.गणेश खरे, "आधुनिक काव्य प्रवृत्तियाँ : एक पुनर्मूल्यांकन", पृ.११५
२. डॉ.गोविंद रजनीश, "स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता", पृ.

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

प्रगतिवादी काव्य वस्तुत: वस्तु को अधिक महत्व देने के लिए शिल्प की उपेक्षा अधिक करता रहा है । परंतु कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" शिल्प को काव्य का उतना ही अभिन्न अंग मानते हैं जितना वस्तु को ।

शैली

कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" की मौलिक रचनाओं के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने प्रगतिशील चेतना को अभिव्यंजना देने का प्रयास अवश्य किया है । अपनी शैली में "सुमन" जी ने नये भावबोध को एक सरल एवं सहज अभिव्यक्ति दी है । कवि "सुमन" जटिल शिल्प का प्रयोग नहीं करते । "सुमन जी की शैलीपर उनके व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट है । उनका जीवन जितना सीधा-सादा है उनकी शैली भी उतनी सीधी-सादी है । वे अपनी बात को घुमा-फिरा कर कहना नहीं जानते । इसलिए उनकी शैली में नाम मात्र भी कृत्रिमता नहीं है । वे यथार्थवादी कवि है । वे जिनके लिए लिखते हैं उनके मानसिक स्तर का वे पूरा ध्यान रखते हैं । इसलिए उनकी शैली में सरलता एवं स्वाभाविकता बराबर बनी रहती है ।"[३] कवि "सुमन" जी के आभार कविता की यह कड़ी देखिए उसमें कितनी सरलता और सहजता है -

> "दायें -बायें सुख दुख चलते
> सम्मुख चलता पथ का प्रमाद
> जिस जिस से पथ पर स्नेह मिला
> उस उस राही को धन्यवाद "[४]

प्रसाद और ओज - गुण से उनकी शैली सम्पन्न है । उनके गीतों में स्वाभाविकता संगीतात्मकता, मस्ती और लय है ।

---

३. राजेन्द्रसिंह गौड़, "हमारे कवि", पृ. ३५५

४. शिवमंगल सिंह "सुमन", "प्रलय-सृजन", - आभार - , पृ. ४४

छन्द योजना

कवि "सुमन" के काव्य में छन्द बद्धता भी है । "उनकी छन्द योजना में विविधता नहीं है । उन्होंने अधिकांशत: मात्रिक छंद ही अपनाये हैं और इन्हीं के माध्यम से अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति की है ।"[5] "सुमन" की कविताएँ सहज अलंकृत और गेय छन्दों में आबद्ध हैं । ये सामान्य श्रोता-वर्ग के लिए लिखी गयी हैं । इसलिए बौद्धिक व्यायाम की इनमें कोई गुंजाइश नहीं है । जैसे -

"गरजती कभी बिजलियों सी चमकती
समुन्दर उफनते, धरित्री धसकती
गरम खून से लाल इतिहास लिखती
चली जा रही है बढ़ी लाल सेना "[6]

ये भाव प्रवण सरस कविताएँ रस और कल्पना की रंगीनियों से आपूर्ण है । कविता को लोकप्रिय होने के लिए उससे अधिक कुछ अपेक्षित भी नहीं है ।

"सुमन" जी को गीतकार के रूप में अधिक सफलता मिली है । "उनके गीतों में रोमांस और वीरता की प्रवृत्ति है । वीर रसात्मक गीतों में कवि अधिक समृद्ध और व्यापक वस्तु-स्थितियों तक जा सका है । वीर गीतों में उद्वेग की प्रधानता है । "सुमन" जी के गीतों में रागतत्व की प्रधानता है ।"[7] कवि "सुमन" के काव्य में रागतत्व की झलक देखिए -

"मुझे सुनाई पड़ा दूर से
नवनिर्माण - चरण - वर-बाधा
भस्मसात कर डाले कमल

५. राजेन्द्र सिंह गौड़ , "हमारे कवि", पृ. २८५
६. शिवमंगल सिंह "सुमन", "प्रलय-सृजन", - चली जा रही है बढ़ी लाल सेना - पृ. ७४
७. डॉ. कमला प्रसाद पाण्डेय, "छायावादोत्तर हिन्दी काव्य की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि ", पृ. १८४

चाल-चलन का वही तकाजा,
दुनिया नई बसाने की
जब देखी घातें और तैयारी
कर्वर घास-फूस की ढेरी पर
मैंने रख दी चिन्गारी " [८]

<u>व्यंग्य</u>

"सुमन" की कविता ओं में व्यंग्य कई स्थानों पर दिखाई देता है । उन्होंने अपनी लेखनी के व्दारा हमारी समाज व्यवस्था, संस्कृति आदि बातोंपर व्यंग्य किया है । कवि सुमन की व्यंग्यात्मक शैली मार्मिकता धारण कर गयी है जैसे -

"मृतप्राय संस्कृति के हामी
बोले - मुख मोडे जाते हो !
अग्नि-स्नान भाकर तुम
शाश्वत सत्यों को छोडे जाते हो !" [९]

<u>प्रतीक</u>

"सुमन" की कविताओं में प्रतीकों की संख्या अधिक मात्रा में है । उन्होंने कई पुरानी बातों को नया संदर्भ देकर नये प्रतीकों के रूप में पेश किया है । "कथा कल्पीय प्रतीकों, रूपकों तथा आप्त बिम्बों की छटा प्राय: अधिकांश कविता में दिखाई पडती है । सहज बिम्बचित्रों की कमी नहीं है पर कविता एक उद्देश लेकर आती है, इसलिए उसके पास कहने को बहुत रहता

---

८. शिवमंगल सिंह "सुमन", "विश्वास बढ़ता ही गया", -इन गीतों के लिए तुम्हारा ऋणी रहूँगा मै आजीवन - , पृ.९०-९१

९. वहीं, पृ. ९१

हैं । इस कारण से कहना ही अधिक होता है ।" [१०] अतः कवि "सुमन" ने हमारे आदर्श पुरुष राम को नये संदर्भों में रूपक बनाकर हमारे सामने एक प्रतीक रखा है जैसे –

"धरा को कैद कर आरामसे
वह रह न सकता था
मनुज इस क्रूर शोषण को
बहुत दिन सह सह न सकता था
स्वयं अन्याय से पीड़ित दलित
को ना जुटाया था
प्रवासी राम ने विद्रोह
का बीड़ा उठाया था ।" [११]

भाषा

कवि शिवमंगल सिंह "सुमन" प्रगतिशील कवि है इसलिए उनकी भाषा में भी परिवर्तन आया हैं । कवि "सुमन" जी ने अपनी भाषा का आयोजन इस बात को सामने रखकर किया है कि यह सामान्य स्तर के लोग इसे समझ सके । कवि ने भाषा में अलंकारिक बनने का प्रयास नहीं किया है । "भाषा को सजाने-सँवारने में और उसे अलंकारिक बनाने का प्रयास न्यूनतम होने से उनकी शैली दुरुह होने से बच गयी है । भावों को उद्दीप्त करने के लिए किस अलंकार का प्रयोग कहाँ होना चाहिए, इसकी चिन्ता से वे मुक्त हैं । भाव-विभोर होकर जिस समय गीतों की रचना करने के लिए वे लेखनी उठाते हैं, इस समय उनकी भाषा उनके भावों का अनुगमन करती है ।" [१२] "सुमन" की भाषा सहज

---

१०. डॉ. अरविन्द पाण्डेय, "हिन्दी के प्रमुख कवि : रचना और शिल्प", पृ. १४२
११. शिवमंगल सिंह "सुमन", "विश्वास बढ़ता ही गया", – जल रहे हैं दीप जलती है जवानी –, पृ. १०५
१२. राजेन्द्र सिंह गौड़, "हमारे कवि", पृ. २५५

और सरल है । सहज भाषा वह है जो अलंकार रहित है । कवि "सुमन" भाषा की शोभा बढ़ाने का खास प्रयत्न नहीं करते क्यों कि भाषा से भाव को अधिक महत्व देते हैं । "सुमन" जी सरल और व्यावहारिक भाषा के पक्षपाती हैं । इसलिए उनकी प्रत्येक रचना में उनकी भाषा स्वच्छ, प्रांजल, ललित, कोमल, बोधगम्य, स्वाभाविक, भावव्यंजक, प्रभावपूर्ण और स्पष्ट है । उनकी भाषा उनके भावों के अनुरूप स्वाभाविक ढंग से अपना रूप निर्माण करती है ।

शब्दचयन के बारे में "सुमन" जी बड़े सतर्क लगते हैं, भाषा बोलचाल की होते हुए भी कभी संस्कृत की गंम्भीरता की ओर तो कभी उर्दू की खानगी की ओर लपक पड़ती है । उनकी खड़ी बोली में संस्कृत के सुपरिचित सरल तत्सम और तद्भव शब्दों के साथ साथ कहीं कहीं "तूफान", "शरम", "किस्मत", "खानाबदोश", "बदतर", "जिन्दगी", "बरबाद", "मौत", "शबनम", "मैखाना", "मावदान" आदि अरबी-फारसी तथा विजातीय शब्द अवश्य मिल जाते हैं किन्तु वे खटकते नहीं, भावों को उद्दीप्त करने में वे सहायक होते हैं । कई स्थानों पर "फुटपाथ" जैसे विदेशी शब्द भी आ गये हैं । "तकाजा", "जनाजा" जैसे शब्द भी आ गये है । भावों के उतार चढ़ाव के अनुरूप उनकी भाषा में भी उतार-चढ़ाव आता है और वह विकासोन्मुख है । प्रसाद एवं ओज से उनकी भाषा सम्पन्न है । वे दिमाग से नहीं, दिल से कविता करते है । इसलिए उनकी भाषा कृत्रिमता के दोष से मुक्त है ।